॥ वृत्तालये स भगवान् जयतीह साक्षात् ॥

आध्यात्मिक उन्नतिका सर्वांग विकास हेतु वडताल संस्थान का त्रिमासिक

स्वामिनारायण संदेश

वर्ष - १ अङ्क – १

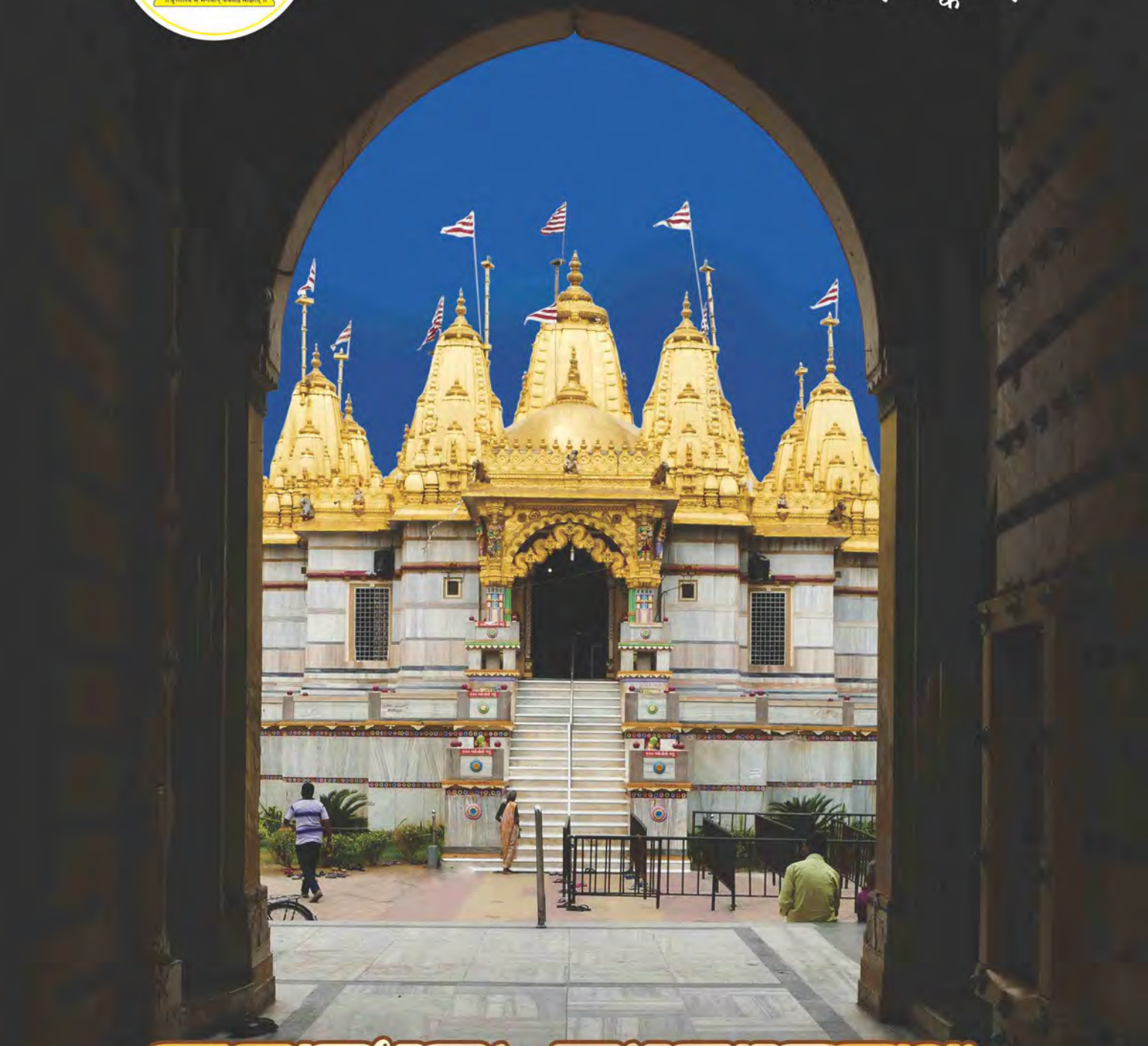

वडताल माहात्म्य

आध्यात्मिक उन्नतिका सर्वांग विकास हेतु वडताल संस्थानका त्रिमासिक

स्वामिनारायण संदेश

वर्ष - १ अङ्क – १

।। वृतालये स भगवान् जयतीह साक्षात् ।।

''अस्मदीयम्''

आज से १९२ साल पहले भगवान श्री स्वामिनारायणने स्वयं जिस मंदिर का शिलान्यास किया, जिस मंदिर की प्रतिष्ठा भी की है । जहां समस्त मानवजाति की सुखाकारी के लिए शिक्षापत्री का लेखन किया है । जहां सांप्रदायिक गुरुपद, आचार्यपद की प्रतिष्ठा हुई है । जहां योगीराज गोपालानंद स्वामीने संप्रदाय का वर्तमान स्वरूप सुनिश्चित किया है । जहां लाखो लोगो के संकल्प पूर्ण करनेवाले ''श्री लक्ष्मीनारायणदेव'' विराजमान है । जहां भगवान श्री स्वामिनारायण स्वयं '' श्री हरिकृष्ण महाराज'' के स्वरूप में विराजमान है ।

ऐसी पुण्यभूमि वडताल की यात्रा करना हम सब की मनोकामना है । परंतु समय और परिवहन सुविधा के अभाव में वह हर किसी के लिए संभव नही होता है । किन्तु आज यह पत्रिका आपको वडतालधाम की शब्दचित्र यात्रा करने का अवसर प्रदान करेगी । प.पू.ध.धू.१००८ आचार्यश्री राकेशप्रसादजी महाराज के संकल्प एवं प्रेरणा से वडताल मेनेजींग ट्रस्टी बोर्ड के चेअरमेन श्री देवप्रकाशदासजी स्वामी एवं मुख्यकोठारी श्री घनश्यामप्रकाशदासजी स्वामी – (वडताल मंदिर) द्वारा यह पुण्यकार्य संपन्न हुआ है ।

इस शब्द-चित्रयात्रा स्वरूप पत्रिका का संकलन कार्य प्रो.हरेन्द्रभाई पी.भट्ट द्वारा संपन्न हुआ है एवं चित्र संकलन, सुनिलभाई आड्सरा द्वारा हुआ है । हमारा प्रयास इस पत्रिका के माध्यम से वडताल का मनोचित्र तैयार करने का है । हमारी पाठकवृंद को करबद्ध प्रार्थना है कि इस पत्रिका को आप तब तक पढते रहे, जब तक आपके मानसपट में तीर्थभूमि वडताल का चित्र स्फुरित न हो ।

मैं आशा करता हुं कि संस्था द्वारा स्वामिनारायण संदेश पत्रिका प्रकाशन के इस कार्य से समस्त सत्संग समाज श्रेय प्रेय प्राप्त करता रहेगा ।

भवदीय

शास्त्री संतवल्लभदास

शास्त्री पूर्णवल्लभदास

प्रकाशित कर्ता

श्री स्वामिनारायण मंदिर, वडताल संस्थान्

ता. नडियाद, जि.खेडा, गुजरात, ३८७ ३७५

Ph. +91 268 - 2589728,776

email : vadtaldhamvikas@gmail.com

Web Site : www.vadtalmandir.org

– : प्रेरणा :–

श्री लक्ष्मीनारायणदेव पीठाधिपति

प.पू.ध.धू.१००८ आचार्यश्री राकेशप्रसादजी महाराज

–: स्वामिनारायण संदेश :–

हिन्दी त्रिमासिक पत्रिका

– : प्रकाशक :–

प.पू.सद्.शा.श्री घनश्यामप्रकाशदासजी स्वामी

मुख्यकोठारीश्री – वडताल मंदिर

–: मेनेजींग तंत्रीश्री :–

डॉ. शास्त्री संतवल्लभदास – Ph.D

शास्त्री पूर्णवल्लभदास

–: तंत्रीश्री :–

श्री हरेन्द्र पी.भट्ट – विद्यानगर

–: डीजाईन एवं कन्सेप्ट :–

सुनिल आड्सरा – विद्यानगर

मितुल ठाकर – मेड पब्लीसीटी, विद्यानगर

–: मूल्य :–

वार्षिक : १५० पंचवार्षिक : ६००

श्री लक्ष्मीनारायणदेव

श्री हरिकृष्ण महाराज

प्रतिश्री,
मुख्य कोठारीश्री,
श्री स्वामिनारायण मंदिर
वडताल संस्थान्

सर्वावतारी आराध्य इष्टदेव श्री हरिकृष्ण महाराज एवं श्री लक्ष्मीनारायणदेव आदि देवो के चरण कमल समीप से सभी सत्संगीजनो को हमारा शुभार्शीवाद सह जय श्री स्वामिनारायण ।

हमें यह बताते खुशी होती है की आज वडताल संस्थान द्वारा यह पत्रिका प्रकाशन कार्य का शुभारंभ हो रहा है । यह अतीव आनंदप्रद घटना है । क्योंकि किसी भी समाज – संस्था व संगठन का विकास उस के साहित्य से होता है । इसी वास्तविकता को नजर समक्ष रखकर के सांप्रदायिक सिद्धांतो को आम समाज के करकमल में रखने का यह प्रयास है ।

आराध्य इष्टदेव भगवान श्री स्वामिनारायण एवं ५०० परमहंसो के कार्य एवं सिद्धांत; हमारें आत्यंत्तिक कल्याण के रसायण है । भगवान श्री स्वामिनारायण का संदेश लेकर यह पत्रिका आपके हाथ में हृदय में पहुंचे ऐसी प्रार्थना ।

विशेष प्रथम प्रयास श्री स्वामिनारायण संप्रदाय के सर्वोच्च तीर्थस्थान – वडताल के चित्रयात्रा के स्वरूप में प्रकाशित हो रहा हैं । इस कार्य के लिए चेरमेनश्री देवप्रकाशदासजी स्वामी, मुख्य कोठारीश्री शा. श्री घनश्यामप्रकाशदासजी स्वामी के मार्गदर्शन अनुसार कार्य करने वालें श्री हरेन्द्रभाई भट्ट , श्री सुनिल आडेसरा इत्यादि को हार्दिक बधाई के साथे शुभाशिष ।

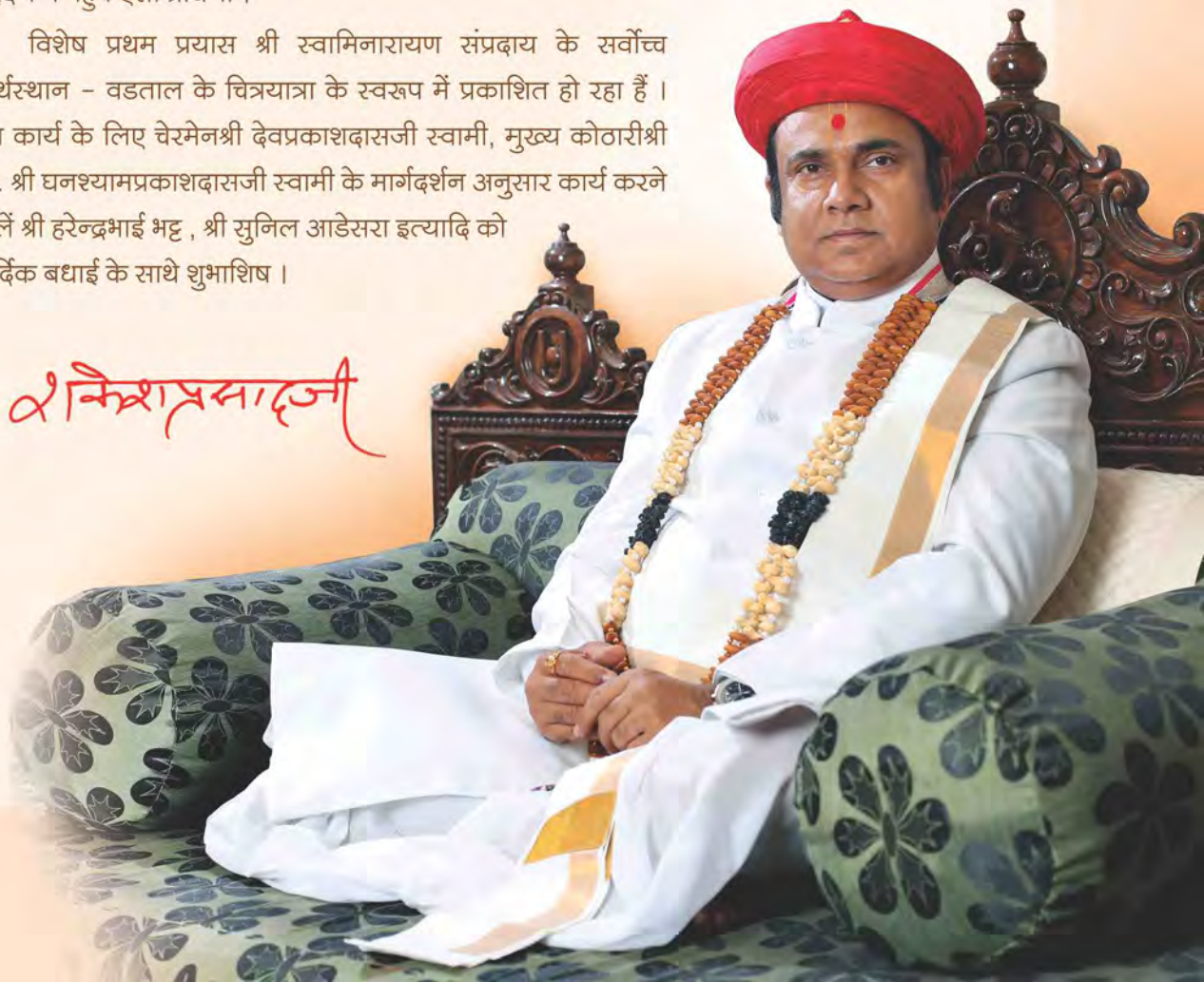

श्री स्वामिनारायण संप्रदाय के सर्वोच्च तीर्थधाम वडताल ''बर्ड आई व्यु'' दर्शन

वडताल माहात्म्य

वृतपुर महिमा कही न जाय, कदी मुख शेष सहस्त्र कल्प गाय ।
वृषसूतकी मुख्य गद्दी जहां है । त्रिभूवन तत्व अनेक तीर्थ वहां है ।।

आज जहां मंदिर है वहां द्वापरयुग में भृगुऋषि की पुत्री श्री लक्ष्मीजीने तपश्चर्या की थी । उनकी तीव्र तपश्चर्या से भगवान नारायणनें प्रसन्न होकर अभीष्ट वर मांगने को कहा । तब लक्ष्मीने कहां कि आप मुझे अपनी भार्या के स्वरूप में स्वीकार करें । और हम यहां पर साथ में रहे । भगवान नारायणने 'तथास्तु' कहा ओर हमें श्रीलक्ष्मी-नारायण जुगलस्वरूप में प्राप्त हुए । एवं उसी वक्त दिए वरदान के अनुसार भगवान श्री स्वामिनारायणने इस मंदिर के मध्यखंड में ''श्री लक्ष्मीनारायणदेव'' प्रतिष्ठित किये और चिन्तामणी की भांति भक्तजनों की मनोकामनापूर्ण करते है ।

आज वडताल श्री स्वामिनारायण संप्रदाय की राजधानी के स्वरूपमें प्रस्थापित हो चूकी है । आइए हम चंदशब्द एवं चित्रो के माध्यम से इस तीर्थभूमि का दर्शन करें ।

आर्ष द्रष्टा शतानन्द मुनि ने श्रीमद् सत्संगिजीवन में उद्घोष कीया, **वृत्तालये स भगवान् जयतीह साक्षात्** - जो परब्रह्म पुरुषोत्तम अक्षरधाम में है वही वरतालधाम में साक्षात् बिराजमान है । यही वरताल का परम सौभाग्य है ।

समस्त विश्व में यह प्रथम घटना है की, सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण ने स्वयं अपने हस्त कमल से निज मूर्ति की प्रतिष्ठा की और अपने आश्रित जनो के लिये एक उपास्य स्वरूप प्रदान कीया ।

एकमेवाद्वितीयं ब्रह्म, एको ह वै नारायण आसीत् , न तस्य कार्यं कारणं च विद्यते न तत्समश्चाभ्यधिकश्च दृश्यते , एको देव: सर्वभूतेषु, एको वशी सर्वभूतान्तरात्मा, योऽक्षरमन्तरो यमयति यमक्षरं न वेद, सर्वे वेदा: यत्पदमानन्ति , मामेकं शरणं व्रज इत्यादि श्रुति स्मृति प्रतिपादित केवल एक मात्र परब्रह्म ही उपास्य है ।

अनन्तकोटी अक्षरमुक्त जो एक स्वरूप की अनन्य उपासना करते है वही यह प्रकट श्री हरिकृष्ण महाराज है । वचनामृत में श्री हरि कृपा कर के बोले, वह तेज पुंज में जो मूर्ति है वही ही यह प्रत्यक्ष महाराज है । स्व स्वरूप का स्थापन कर के श्री हरि ने उपासना का मार्ग विशुद्ध कीया ।

श्री हरिकृष्ण महाराज, श्री राधाकृष्णदेव

श्री हरिकृष्ण महाराज, श्री राधाकृष्णदेव

सर्वावतारी भगवान श्री स्वामीनारायण उनको प्रिय ऐसे अवतार स्वरूप श्री राधाकृष्णदेव को दक्षिण खंड में प्रस्थापित किये है जो भक्त जनों के पाप ताप को दूर कर सुख समृद्धी प्रदान करते हैं ।

सर्वावतार धर्तारं भुक्तिमुक्तिप्रदायकम् ।
वन्देऽहं स्वेष्टदेवं तं हरिकृष्णं मनोहरम् ।।

आज्ञा और उपासाना की इस भूमि पर अपने भक्तजनो को उपासना हेतु सर्वावतारी श्री हरि ने निज मूर्ति का स्थापन कीया, केवल पुरुषोत्तम नारायण श्री हरिकृष्ण महाराज की शुद्ध उपासना का राजमार्ग निष्कण्टक किया ।

श्री रणछोडरायजी, श्री लक्ष्मीनारायणदेव

सातपुरी, चारधाम से अत्यधिक महिमावती वृतपुरी आज तीर्थराज बनी है । सद्. गोपालानन्द स्वामी ने अपने स्तोत्र में उद्घोष किया है,

राजन्ते सर्वतीर्थानि यत्र च सर्वदेवता ।
वन्देऽहं तीर्थराजं तत् धाम वृत्तालायाभिधम् ।।

द्वारिका तीर्थ से यहां श्री रणछोडरायजी बिराजमान है । भगवान श्री हरिके हस्त कमल से प्रतिष्ठित श्री लक्ष्मीनारायणदेव भक्तजनो की मनोकामना पूर्ण करते है । प्रतिष्ठा के समय श्री हरिने रहस्य बताया, जो वैकुण्ठ में लक्ष्मीनारायणदेव है यहि यहां साक्षात् है ।

श्री रणछोडरायजी, श्री लक्ष्मीनारायणदेव

श्री धर्म भक्ति वासुदेव

श्री धर्म भक्ति वासुदेव

वडताल मंदिर के उत्तरखंड में भगवान श्री हरी ने अपने पिता धर्मदेव एवं माता भक्तिदेवी की स्थापना कर मातृदेवो भव पितृदेवो भव उपनिषद वाक्य को सार्थक किया है । वासुदेव स्वरूप में स्वयं बिराजमान होकर भक्तजनों को दर्शाते हैं की मै चराचर में बसा हुआ हूँ, मै आपके साथ हूँ ।

श्री हरिमंडप

श्री हरि की निगरानी में तैयार हुआ हरिमंडप का स्थान सबसे अलग ही है। श्री हरि स्वयं अनेको बार इस स्थान में रहे हैं एवं लीलाएं की हैं। श्री स्वामिनारायण सम्प्रदाय की आचार संहिता शिक्षापत्री का लेखन कार्य भी इसी मंडप में हुआ है। श्रीहरि के प्रसादीभूत जलसे स्नान करते वक्त कोली ज्ञाति के लडकों को इन्द्र पदवी इसी स्थान पर प्राप्त हुई है। इस स्थान में बैठकर श्रीहरि की मूर्ति का ध्यान करनेवाले को परमशान्ति का अनुभव होता है।

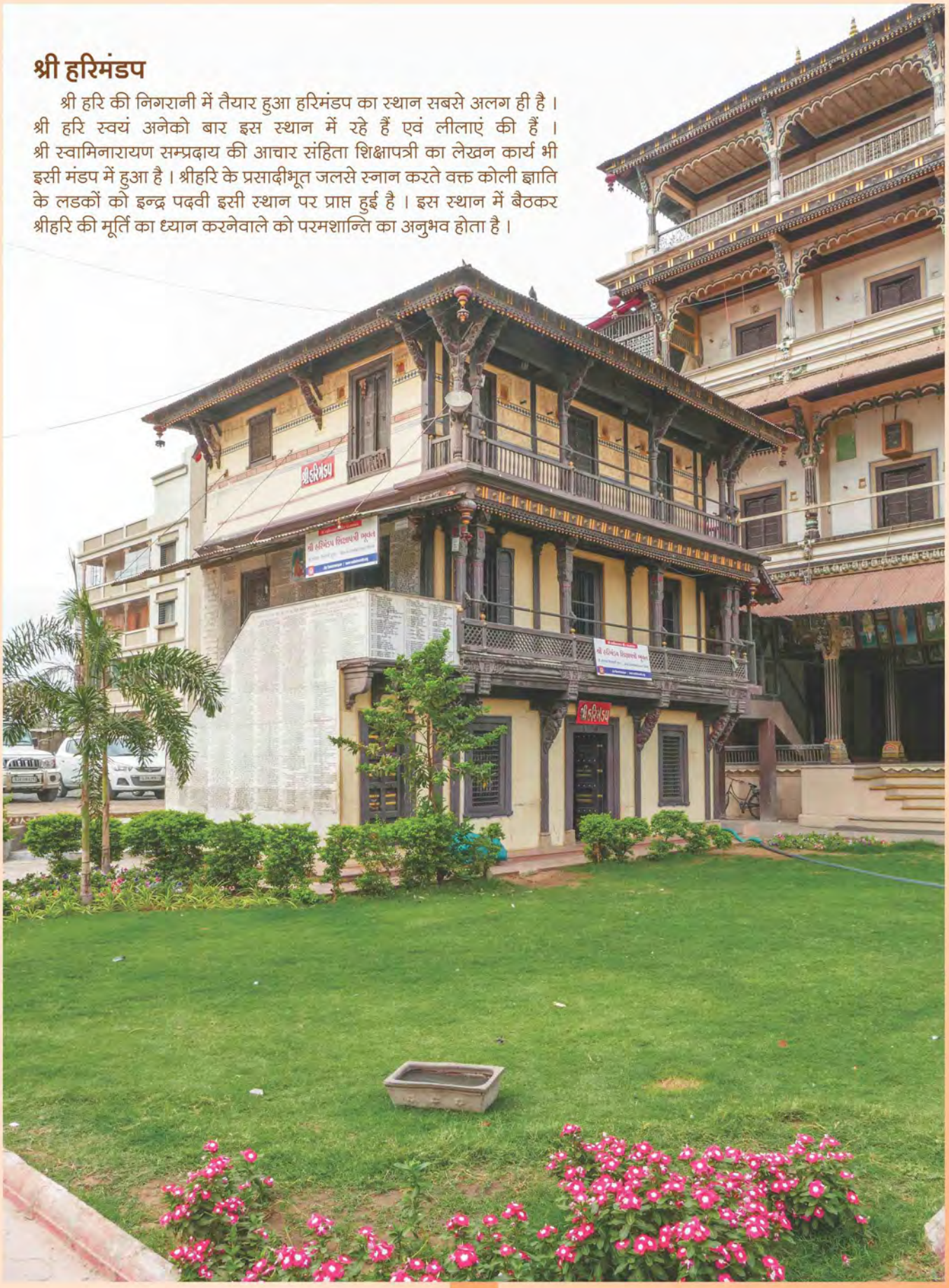

श्रीनारायण महल

श्रीहरि के अग्रज भ्राता श्री रामप्रतापजी इस बंगले में अनेकोबार रहे थे और इसीलिए इस स्थल को ''रामप्रतापभाई का बंगला'' ऐसे नाम से भी जाना जाता है ।

गद्दीवाला मेडा (मंजिल)

यह स्थान आचार्यश्री के रहने के लिए था । आदि आचार्य श्री रधुवीरजी महाराजने इसी गद्दी पर श्रीहरि को बैठाकर पूजन-अर्चन किया था । तत्पश्चात, श्रीहरिने रधुवीरजी महाराजको इस गद्दीपर बैठाकार आचार्य पद प्रदान कीया था ।

अक्षरभूवन

वडताल गद्दी के तृतीय आचार्य प.पू.ध.धू.१००८ आचार्यश्री विहारिलालजी महाराजश्रीने दिव्य एवं भव्य अक्षरभूवन का निर्माण करवाया था ।

श्रीहरिने अपने जीवनकालमें उपयुक्त की हुई दूर्लभ प्रसादीभूत विभिन्न वस्तुओ का यह संग्रह स्थान है ।
द्वादश स्वरूप में दर्शन दिया ऐसा द्वादश द्वार का झूला भी यहीं है ।

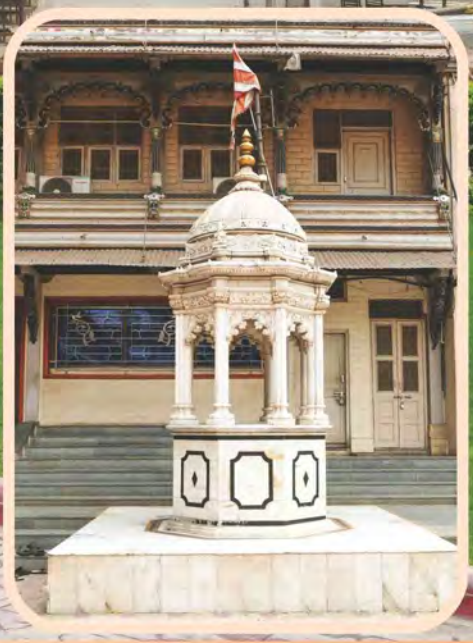

नीम के वृक्षवाला चौतरा (मंच)

इस पवित्र स्थान पर श्रीहरिने वचनामृत का उद्बोधन किया है । यहां पर एक नीम का वृक्ष था जिसकी एक शाखा मीठी थी । इस स्थान पर बडौदा के शास्त्रीजी को श्री हरिजीने चतुर्भुजरूप में दर्शन दिए थे ।

श्रीजी महाराज इस मंदिर की नित्य २०० प्रदक्षिणा करते थे । प्रदक्षिणा समाप्त होने पर मंदिर के प्रदक्षिणा मार्ग में आए हुए छत्र के स्थलपर श्री हरि विश्रांति के लिए बैठते थे ।

आचार्य स्थापना स्थान

सम्प्रदाय परंपराको दीर्घकालीन अक्षुण्ण रखने हेतु श्रीहरिने सनातन वैदिक परपरा के अनुसार आचार्य पद यह स्थान पर प्रदत्त किया । देशविभाग करके वडताल श्री लक्ष्मीनारायण देव की गद्दी प.पू.ध.धू.आचार्यश्री रधुवीरजी महाराज को तथा अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव की गद्दी प.पू.ध.धू.आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराज को आध्यात्मिक एवं धार्मिक कार्यभार वहन करने हेतु गद्दी प्रदान की ।

सभामंडप

प.पू. सद्. श्री ब्रह्मचारी पवित्रानंद स्वामी एवं संतजनो द्वारा यह सभामंडप का निर्माणकार्य हुआ । इस सभामंडप की चौडाई पूर्व - पश्चिम ५८ फीट तथा उत्तर - दक्षिण की लम्बाई १४६ फीट है । काष्ट स्तम्भ में सुन्दर नक्शी की गई है। संवत् १९२५ में प.पू.ध.धू.आचार्यश्री भगवतप्रसादजी महाराज के शुभ हस्तकमल से इसका उद्घाटन हुआ ।

ज्ञानकूप

मंदिर के पिछले भाग में ज्ञानकूप है । संत - भक्तजनों ने अनेकोबार श्रीहरि को स्नान करवा कर चरणामृत इस कूप में डाला है । इसी स्थान पर श्रीहरिने ज्ञानोपदेश दिया था । इसीलिऐ इस कूप का नाम ''ज्ञानकूप'' है ।

श्री गणेशजी श्री हनुमानजी

श्रीजी महाराजने स्वयं प्रस्थापित किए गणपतिजी तथा भीडभञ्जन हनुमानजी भक्तों के विघ्न एवं बाधाएं दूर करते हैं ।

संतो की धर्मशाला

यहां महासमर्थमूर्ति सद्. श्री गोपालानंद स्वामी, स्वयंप्रकाशानंद स्वामी, मंजुकेशानंद स्वामी, नित्यानंद स्वामी जैसे ७०० उपरांत संतजनों के आसन यहा रहते थे । अर्थात् उसका निवास था । स्वयं श्रीहरि ने ४९६ बार संतजनों को पङ्गित में भोजन परोसा था ऐसी दिव्य प्रसादीभूत यह धर्मशाला है ।

बूरज

धर्मशाला की उपली मंजिल के मुख्य द्वार के पास एक कोढी है । जहां पर श्रीहरि समैया उत्सव के समय बिराजमान होकर भक्तजनों को दर्शन देते थे तथा सत्संग करते थे । यह स्थान, बूरज के नाम से जाना जाता है ।
इस पवित्र स्थल पर सम्प्रदाय के महान संत सद्. श्री आधारानन्द स्वामी ने श्री हरिचरित्रामृत सागर नामक हिन्दी भाषामें बृहद् ग्रन्थ की रचना की है । श्री हरि के लीला चरित्रो एवं उपदेश वचनो से भरपूर यह ग्रन्थ अक्षरभूवन में दर्शन हेतु प्रस्थापित किया गया है ।

जोबनपगी की मंजिल

श्रीहरि ने डभाण में हो रहे यज्ञ के समय जोबनपगीको निश्चय कराने हेतु अपने दिव्य स्वरूप की इसी मंजिल की खिडकी में बैठकर दर्शन दिए थे ।

वडेउ माताजी की धर्मशाला

इस धर्मशाला में संतजनो के साथ भगवान् श्रीहरि ने अनेकोबार निवास किया है । श्रीजी महाराज ने माताजी की रंग स्नान करवा के पूजा – अर्चना की थी ।

ज्ञानबाग

वृन्दावन के समान यह उद्यान श्रीहरि को बहुत प्रिय था । यहां निष्कुलानंद स्वामी ने आम्रवृक्ष की शाखा पर द्वादश द्वार के झुलेपर श्रीहरि को झुलाए है । बारह स्वरूप धारण करके श्रीहरिने दर्शन दिये थे । यहां रंगोत्सव किया है । कई बार सभा करके ज्ञानोपदेश दिया है । इसीलिए यह ज्ञानबाग दिव्य प्रसादीभूत स्थल है ।

श्री केदारेश्वर महादेव

ज्ञानबाग के समीप आए हुए श्री केदारेश्वर महादेवजी की पूजा - अर्चना स्वयं श्रीहरिने की है । जिससे यहां दर्शन करनेवालों को केदारनाथ की यात्रा का फल प्राप्त होता है ।

ताडन तालाब

धर्मकुल और श्रीहरि का प्रथम मिलाप यहां हुआ था ।

शमीपूजन का छत्र

भगवान श्रीहरि ने संत एवं भक्तजनों के साथ दशहरा के पावन पर्व पर शमीवृक्ष की पूजा - अर्चना की है ।

जलक्रीडा का छत्र

भगवान श्रीहरि ने पांचसो परमहंस के साथ इस स्थान पर जलक्रीडा की है ।

गोमतीतट पर प्रसादी का छत्र

इस पवित्र स्थान पर श्रीहरिने वडताल के १,२,५ ये तीन वचनामृत कहे हैं ।

प्रसादी का छत्र

इस पवित्र स्थान पर श्रीहरिने बंदरों के पास माला देकर जप करवाया था । यह ऐसा दिव्य स्थान है ।

श्री गोमती सरोवर (धारु तालाब)

श्रीहरि के संकल्प से समाधिनिष्ठ सच्चिदानन्द स्वामी द्वारिका तीर्थ से श्री रणछोडरायजी को दिव्य स्वरूपमे वरताल ले आये । श्री रणछोडरायजी के साथ तीर्थ स्वरूपा श्री गोमतीजी भी साथ पधारे थे । उस वक्त श्रीहरिने गोमतीजी को विद्यमान धारु तालाब मे निवास दिया । स्वयं श्रीहरि और तत्कालीन नंदसंतो एवं भक्तजनो ने स्वपरिश्रम से यह गोमती तीर्थसर को जीर्णोद्धार स्वरूप में विस्तृत किया । भगवान श्रीहरिने अनेकोबार इस सरोवर में संतगण के साथ स्नान एवं जलक्रीडा की है । अत: यह गोमती सर गंगातुल्य पवित्र और पापो का नाशक है । प.पू.ध.धू.आचार्यश्री विहारीलालजी महाराजने शीला स्थापन कर के इसे सुसज्ज कीया है।

श्री हरिकृष्ण यात्रिक भोजनालय

शिक्षापत्री के आदेश अनुसार मंदिर में आया हर एक अभ्यागत का भोजन-प्रसाद से आदर सत्कार करें । इस आदेश को मूर्त स्वरूप देकर विशाल श्री हरिकृष्ण यात्रिक भोजनालय का निर्माण हुआ । जहां दस हजार से ज्यादा भक्तजन एक साथ शान्तिपूर्ण प्रसाद ले सकते है ।

श्री हरिकृष्ण यात्रिक भूवन

तीर्थयात्रा, तीर्थवास, तीर्थसेवन भारतीय संस्कृतिका जाना माना अंग है । वरताल धाम में आज एक हजार निवास कक्ष आधुनिक सुविधा से युक्त है ।

श्री लक्ष्मीनारायण संस्कृत पाठशाला

प्रवर्तनीया सद्विद्या भूवि यत् सुकृतं महत् । (शिक्षा.)

श्री हरिके यह उदात्त आदेश को मूर्त स्वरूप दे कर श्री लक्ष्मीनारायण संस्कृत पाठशाला आज प्राच्य विद्या का संवहन कर रही है । वेद, वेदान्त, व्याकरण, न्याय, साहित्य और साम्प्रदायिक ग्रन्थो का यहां पठन पाठन सुचारु रूप से हो रहा है । वरताल देश के संत एवं ब्रह्म बटु इस पाठशाला से लाभान्वित होते है ।

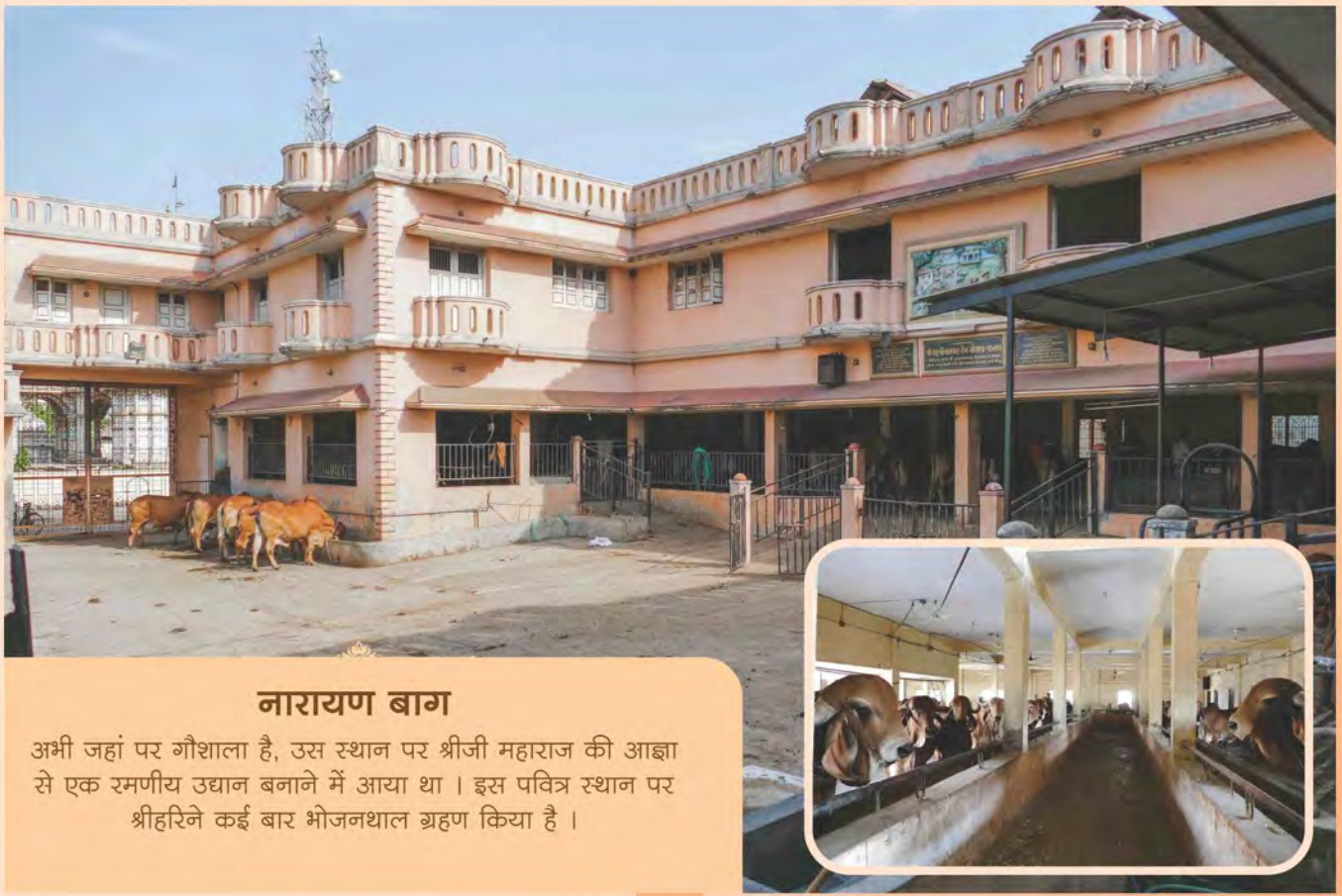

नारायण बाग

अभी जहां पर गौशाला है, उस स्थान पर श्रीजी महाराज की आज्ञा से एक रमणीय उद्यान बनाने में आया था । इस पवित्र स्थान पर श्रीहरिने कई बार भोजनथाल ग्रहण किया है ।

गोपी तालाब

सुनार कुएं से उत्तर दिशा की और यह तालाब आया हुआ हैं ।
श्रीजी महाराज ने कई बार यहां स्नान किया हैं ।

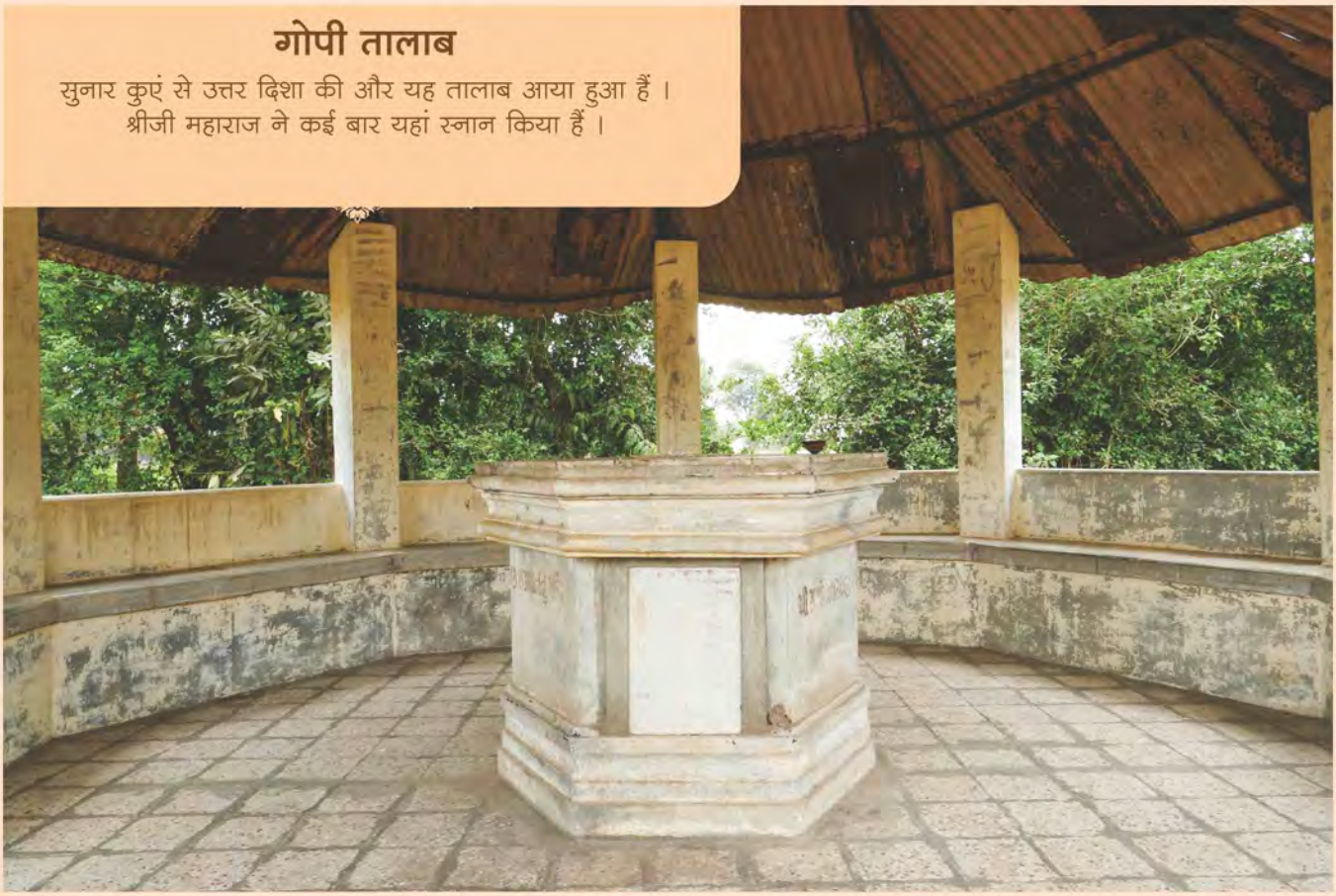

खोडीयार माँ

सुनार कुएं से दक्षिण दिशा की और यह स्थान आया हुआ है । इस स्थान पर श्रीजी महाराज ने माताजी के ऊपर रंग छिडका था । तब से वहां माताजी के कहने पर हिंसा बंध हो गई है ।

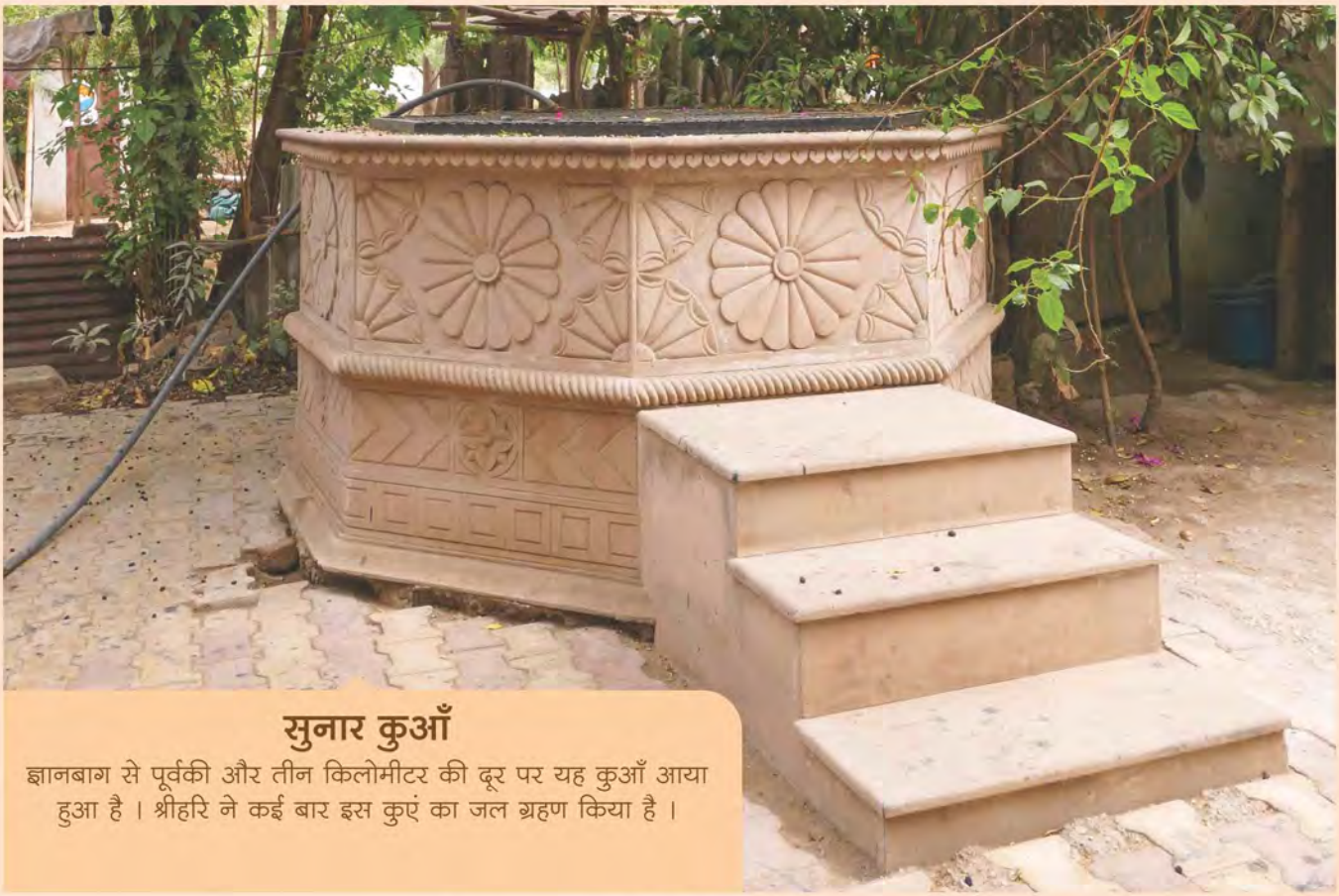

सुनार कुआँ

ज्ञानबाग से पूर्वकी और तीन किलोमीटर की दूर पर यह कुआँ आया हुआ है । श्रीहरि ने कई बार इस कुएं का जल ग्रहण किया है ।

गंगाजलीया कुआँ

सभा मंडप के पिछले भाग में आए इस कुएं में श्रीहरि के संकल्प से गंगाजी प्रकट हुए थे इसीलिए ''गंगाजलीया कुआँ'' नामसे प्रसिद्ध है ।

धना तालाब

ताडन तालाब से पश्चिम की और थोडे दूर यह तालाब आया है । श्री हरिने यहां स्नान किया है एवं संतजनों के साथ भोजनप्रसाद भी ग्रहण किया है । यह तालाब चन्दन तालाब के नाम से भी प्रसिद्ध है ।

सुंदरपगी का कुंआँ

रेल्वेस्टेशन से उत्तर की और निकट में आए हुए इस कुएं की जगह पर बैठकर श्रीजी महाराज ने स्नान किया है । वह जल संतजनों ने कुएं में डाल कर इस कुएं को प्रसादीभूत किया है ।

वासण सुथार का घर

अति निष्ठावान वासण सुथार ने श्रीहरि के चरणकमल में अपना घर अर्पण कर श्रीहरिकी प्रसन्नता प्राप्त की थी । आज इस दिव्य स्थान पर सांख्ययोगी माताऐं श्रीहरि का भजन-कीर्तन करती हैं ।

श्री घेला हनुमानजी

वर्णीरूप में श्रीहरि वडतालधाम आए तब हनुमानजी के मंदिर में रात्रि रहे थे । मूर्ति पर श्रीहरिने अपने दोनों हस्तकमल रखकर महाप्रसादीभूत की है ।

अखूट अन्न कोठी एवं रयान का वृक्ष (बामरोली गांव)

वडताल के निकट आया हुआ बमरोली गाँव वडताल धाम से उत्तर की और महुडियापुरा गाँव से आगे आया है । 'तखापगी का बामरोली' नामसे प्रसिद्ध है । यहां पर खिरनी के वृक्ष तले श्रीहरि झुला झुले हैं । श्रीहरि के आशीर्वाद से कालवर्ष में अन्न कभी खाली नहीं होता था । ऐसी प्रसादी की कोठी (कोठार) मंदिर में प्रसादी के रूप में दर्शन हेतु रखी गई है ।

नि:शूल्क सेवारत श्री स्वामिनारायण मल्टी स्पेशियालिटी होस्पिटल

आज के युग में हम सब का लगाव ''वडतालधाम'' के साथ युं ही नहि है, हमारी आस्था सें अधिक आध्यात्मिक ऊर्जा वडताल में है । और आप सब को यह जानकर के आश्चर्य होगा कि – वडताल संस्थान् द्वारा नि:शूल्क अस्पताल कार्यान्वित है ।

श्री लक्ष्मीनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धू.१००८ आचार्यश्री राकेशप्रसादजी महाराज के शुभाशीर्वाद एवं चेअरमेनश्री देवप्रकाशदासजी स्वामी और मुख्यकोठारीश्री पू.शा.श्री घनश्यामप्रकाशदासजी स्वामी इत्यादि समस्त संत भक्तगण के प्रशस्त प्रयास के प्रभाव सें प्रतिदिन ४०० से ज्यादा व्यक्ति आरोग्य सेवा प्राप्त करते है ।

वडताल संस्थान् द्वारा शुरू हुआ यह आरोग्ययज्ञ हम सब की सेहत के लिए आशीर्वाद स्वरूप है । यदि आप वडताल दर्शन के लिए आते है तो इस आरोग्यतीर्थ ''अस्पताल'' का दौरा जरुर करें ।

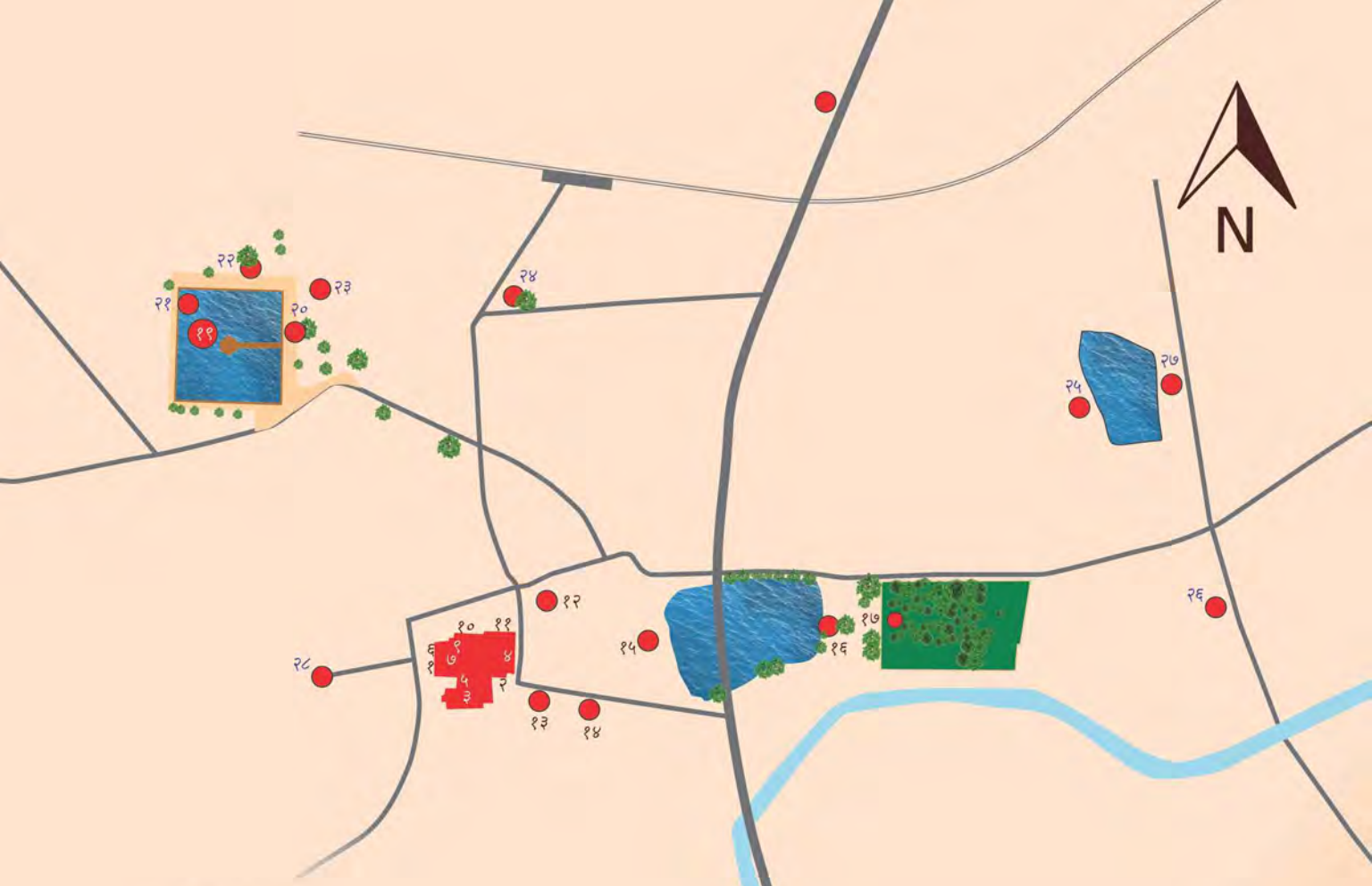

१. श्री हरिमंडप
२. श्री नारायण महल
३. अक्षरभूवन
४. नीम के वृक्षवाला चौतरा (मंच)
५. आचार्य स्थापना स्थान
६. सभामंडप
७. ज्ञानकूप
८. श्री गणेशजी श्री हनुमानजी
९. गद्दीवाला मेडा (मंजिल)
१०. संतो की धर्मशाला
११. बूरज
१२. वासण सुथार का घर
१३. वडेउ माताजी की धर्मशाला
१४. जोबनपगी की मंजिल
१५. श्री घेला हनुमानजी
१६. श्री केदारेश्वर महादेव
१७. ज्ञानबाग
१८. ताडन तालाब
१९. श्री गोमती सरोवर (धारु तालाब)
२०. शमीपूजन का छत्र
२१. जलक्रीडा का छत्र
२२. गोमतीतट पर प्रसादी का छत्र
२३. नारायण बाग
२४.सुंदरपगी का कुआँ
२५. गोपी तालाब
२६. श्री खोडीयार माँ
२७. सुनार कुआँ
२८. गंगाजलीया कुआँ
२९. धना तालाब

श्री स्वामिनारायण मंदिर, सिलकुवा

दशाब्दि महोत्सव

निमाड (म.प्र.) में सत्संग का मुख्य केन्द्र सिलकुवा गाँव में प.पू. सद्. श्री गोविंदप्रसाददासजी स्वामी द्वारा मंदिर का निर्माण हुआ । इस मंदिर की दशवीं वार्षिक तिथि पर समस्त सत्संग के सहकार से भागवत सप्ताह पारायण का आयोजन हुआ । शा. स्वामी सर्जुदासजी ने यहां के भक्तजनो को कथामृत से लाभान्वित किये ।